राग-नाद-धुन

कीता पसाउ एको कवाउ ॥
तिसते होए तरव दरीआउ ॥ (पृ. ३)

साचे ते पवना भइआ पवनै ते जलु होइ ॥
जल ते त्रिभवणु साजिआ घटि घटि जोति समोइ ॥ (पृ. १९)

इक कवाउ पसाउ करि कुदरति अंतरि कीआ पसारा॥ (वा.भा.गु. ८/१)

एंककारहु सबद धुन ओंकार अकार बणाइआ ॥ (वा.भा.गु. २६/२)

यह कवाउ (हुक्म) **ज्योति 'अनहद-नाद' या शब्द धीमा (faint)** हो कर कहीं समाप्त नहीं हो गया अपितु यह तो सारी ब्रह्मांड में **लगातार परिपूर्ण है ।** इस की गूंज न कभी घटती है न बढ़ती है । आवश्यकता तो केवल इसे **अनुभव करने की ही है ।**

भुगति गिआनु दइआ भंडारणि घटि घटि वाजहि नाद ॥ (पृ. ६)

जिमि जमान के बिखै समसति एक जोत है ॥
न घाटि है न बाढि है न घाटि बाढि होत है ॥ (अकाल उसतत पा. १०)

इसी **'अनहद ध्वनि'** को गुरबाणी में **'नाम', 'शब्द', 'सच' 'हुक्म', 'जीवन रौं', 'लिव',** आदि नामों से सम्बोधित किया गया है । यह "अनहद-धुन" इतनी शक्तिशाली है कि 'दृष्टमान' तथा 'अदृष्ट' दोनों दुनिया इसी के आश्रय (सहारे) पर **उत्पन्न** होती है, **मिटती है तथा उनकी सर्व-सम्भाल होती है ।**

उतपति परलउ सबदे होवै ॥
सबदे ही फिरि ओपति होवै ॥ (पृ. ११७)

हुकमे धारि अधर रहावै ॥
हुकमे उपजै हुकमि समावै ॥ (पृ. २७७)

नाम के धारे सगले जंत ॥
नाम के धारे खंड ब्रहमंड ॥
नाम के धारे सिंम्रित बेद पुरान ॥
नाम के धारे सुनन गिआन धिआन ॥
नाम के धारे आगास पाताल ॥
नाम के धारे सगल आकार ॥
नाम के धारे पुरीआ सभ भवन ॥
नाम के संग उधरे सुनि स्रवण ॥ (पृ. २८४)

इलाही नाद जो प्रत्येक जीवन में गुंज रहा है **इसे ही—**

अनहद नाद
अनहद शब्द
अनहद धुन
अनहद झंकार
धुनकार धुन
शब्द धुन
पंच शब्द
निर्मल नाद
रुनझुन
सहज धुन

आदि कहा गया है । यही **'एको-कवाउ' की भाषा** है जो सारी सृष्टि का कण-कण **'नेति-नेति बन त्रिण कहत'** अनुसार **बोल** रहा है ।

सभै घट रामु बोलै रामा बोलै ॥
राम बिना को बोलै रे ॥ (पृ. ९८८)

चात्रिक मोर बोलत दिनु राती सुनि घनिहर की घोर ॥
जो बोलत हैं म्रिग मीन पंखेरु
सु बिनु हरि जापत है नही होर ॥ (पृ. १२६५)

दृष्टमान संसार में जीव-जंतु, बनस्पति, पहाड़, नदियां, चन्द्रमा, सूर्य तथा तारें आदि सभी इस **'सहज-धुन'** या **मूक भाषा** का—

राग रुप में
शब्द रूप में
धुन रूप में

हर समय, हर स्थान पर बोल रहे हैं।

घटि घटि बाजै किंगुरी अनदिनु सबदि सुभाइ ॥ (पृ. ६२)

अनहद सबदु वजै दिनु राती ॥
अविगत की गति गुरमुखि जाती ॥ (पृ. ९०४)

तह अनहद सबद वजहि धुनि बाणी
सहजे सहजि समाई हे ॥ (पृ. १०६९)

राग, साज, सुर, लय, ताल उस **'अनहद-नाद'** या **'अनहद-शब्द'** का केवल **अक्स मात्र प्रक्ट करने के साधन हैं।** इस राग को जिसमें से **रस रूपी भावनाएँ उत्पन्न होती हैं, कोई विरला ही अनुभव द्वारा बूझ कर आनंदित हो सकता है।**

घटि घटि बाजै किंगुरी अनदिनु सबदि सुभाइ ॥
विरले कउ सोझी पई गुरमुखि मनु समझाइ ॥ (पृ. ६२)

राग रतन परीआ परवार ॥
तिसु विचि उपजै अम्रित सार ॥
नानक करते का इहु धनु मालु ॥
जे को बूझै एहु बीचारु ॥ (पृ. ३५१)

हम तो केवल राग की बाहरी टूँ-टूँ को ही सुनकर **वाह-वाह कर देते हैं।** **'तत-राग' का ज्ञान किसी किसी को होता है।** आम साधारण लोगों की बुद्धि 'राग-तत' को **पकड़ नहीं सकती।**

जहा बोल तह अछर आवा ॥
जह अबोल तह मनु न रहावा ॥
बोल अबोल मधि है सोई ॥
जस ओहु है तस लखै न कोई ॥ (पृ. ३४०)

साठ वर्ष पूर्व की एक घटना है । १९३० में हम लायलपुर एक मूक फिल्म (Silent Movie) देखने गए । दो बज़ुर्ग सम्बन्धी भी साथ थे । उनमें से एक की आयु लगभग ८० वर्ष की थी ।

फिल्म शुरू होने से पहले पियानो (piano) पर कोई राग बज रहा था । **राग सुनते-सुनते** बज़ुर्ग की पहले तो उगलियां हिलनी शुरू हुई फिर धीरे-धीरे उनके शरीर में हरकत आनी शुरू हो गई तथा कुछ समय पश्चात वह **राग लीनता में** कुर्सी से उठे और नाचने लगे । कितनी ही देर तक वह **बेखुदी की अवस्था** में नाचते रहे तथा राग की धुन समाप्त होते ही पियानो बजाने वाले को आलिंगन में लेकर वाह-वाह कर उठे ।

सभी दर्शक इस दृष्ठ को देख कर हैरान व चकित हो रहे थे । **राग की सूक्ष्म तरंगें आम लोगों की समझ से परे थीं** । वह सब तो राग सुनने की अपेक्षा उस बज़ुर्ग को देख-देख कर ही आनंदित हो रहे थे । **परन्तु राग ने उस बज़ुर्ग की आंतरिक तरंगों को हिलाया और उसका आंतरिक 'सुप्त 'राग' जाग उठा ।**

हम सब राग के **वास्तविक 'तत' से अनभिज्ञ थे** । हम सब में से केवल वह बज़ुर्ग ही थे **जिनकी सुरति ने उस गुप्त 'राग-तत्' को पकड़ लिया तथा वह उसके रंग में विस्माद हो गए ।**

वास्तव में राग **बुद्धि के दायरे की वस्तु नहीं है** । यह अति सूक्ष्म तत् है जो बुद्धि की **पकड़ से परे है** । इसे केवल **"अनुभवी सुरति" वाला व्यक्ति ही पकड़ तथा समझ सकता है** और आनंद उठा सकता है । बाकी तो केवल सुर, लय, ताल सुन कर ही मानसिक आनंद उठा लेते हैं । **मूल तत्** तक पहुंचना तथा उसे बूझना उनके बस की बात नहीं । यह तो **"ईश्वरीय-देश"** अथवा **"अनुभवी मंडल" की अमूल्य देन है** इसीलिए सतगुरू जी ने **'ईश्वरीय बाणी' को रागों में उच्चारित किया** । राग ही आत्मिक मंडल की **गुप्त मूक बाणी** है । राग किसी न किसी रूप में प्रत्येक जीव की सुरति को **आकर्षित करने तथा जोड़ने की क्षमता रखता** है । मनुष्य तो क्या पशु पक्षियों पर भी इसका असर देखा गया है।

जिस राग को हम साधारण लोग सुनते तथा आनंद लेते हैं वास्तव में वह उस "अनहद नाद" (Divine music) का **'अक्स मात्र' बाहरी प्रकटाव है** । सूक्ष्म "इलाही नाद" का आनंद स्थूल बुद्धि वाले जीव नहीं ले सकते ।

धुनित ललित गुनग्य अनिक भांति ।।
बहु बिधि रूप दिखावनी नीकी ।। (पृ. १२७२)

राग का तत् या **'अनहद-शब्द'** अति सूक्ष्म वस्तु है जिसे **स्थूल बुद्धि नहीं पकड़ सकती ।** सूक्ष्म वस्तु को समझने के लिए सूक्ष्म बुद्धि या 'अनुभव' की आवश्यकता है । राग को बाह्य रूप सुर, लय, ताल को पकड़ पाने की **क्षमता** हर व्यक्ति की भिन्न भिन्न होती है । वैसे तो राग सभी को आकर्षिक करता है तथा सभी के कानों को **सुखदायी तथा** प्यारा लगता है । कवि शेक्सपियर ने तो यहा तक कह दिया था कि **"वे लोग तो फांसी लगाने योग्य हैं जिनके "राग" सुनने वाले कान नहीं" ।**

गुरू साहिब ने गुरबाणी गायन करने के लिए 'रागों' का **प्रयोग किया** है ताकि इनके द्वारा कोमल हुए मन पर गुरबाणी के **इलाही तीरों का गहरा असर हो ।**

इस प्रकार सतगुरु जी ने रागों का प्रयोग मानसिक मनोरंजन से **ऊपर उठा कर इलाही गुण गाने के लिए किया** तथा गुरबाणी को श्री गुरु ग्रंथ साहिब में अंकित किया और **इलाही रंगत चढ़ाई ।**

इसे और स्पष्ट करने के लिए यह बताना आवश्यक है कि **गुरबाणी** में परमात्मा के **इलाही प्रेम की अनहद 'धुन' ओत–प्रोत परिपूर्ण है** तथा **राग-नाद** भी इसी अनहद धुन **को प्रकट करने के साधन हैं ।**

इसलिए **गुरबाणी के शब्द में जो भावना प्रधान होती है राग-नाद उसे बढ़ाकर (amplify) और भी तीव्र तथा तीक्ष्ण कर देता है और हमारा अमोड़ व कठोर मन द्रवित हो कर अपने आप उस भावना के सागर में तैरता हुआ आत्मिक आनन्द लेता है तथा 'अनहद-धुन' की झलकें अनुभव करता है ।**

गुरबाणी के निम्नलिखित प्रमाणों से यह विचार और भी स्पष्ट हो जाता है—

रागा विचि सिरीराग है जे सचि धरे पिआरु ।। (पृ. ८३)

गउड़ी रागि सुलखणी जे खसमै चिति करेइ ।। (पृ. ३११)

रामकली रामु मनि वसिआ ता बनिआ सीगारु ।। (पृ. ९५०)

मलारु सीतल रागु है हरि धिआइऐ सांति होइ ।। (पृ. १२८३)

गुरमुखि मलारु राग जो करहि तिन मनु तनु सीतलु होइ ।। (पृ. १२८५)

धनासरी धनवंती जाणीऐ भाइ
जां सतिगुर की कार कमाइ ।। (पृ. १४१९)

सोरठि सो रसु पीजीऐ कबहु न फीका होइ ।।
नानक राम नाम गुन गाईअहि दरगह निरमल सोइ ।। (पृ. १४२५)

बाहरी राग नाद 'अनहद धुन' या 'सहज धुन' का **अक्स है इसी कारण** गुरू साहिब ने निरंकार की सिफ्त सलाहना के साथ-साथ ही इन **राग-नादों की भी सराहना की है ।**

धनु सु राग सुरगंड़े अलापत सब तिख जाइ ।।
धनु सु जंत सुहावड़े जो गुरमुखि जपदे नाउ ।। (पृ. ९५८)

नानक निरमल नादु सबद धुनि
सचु रामै नामि समाइदा ।। (पृ. १०३८)

सभना रागां विचि सो भला भाई जितु वसिआ मनि आइ ।।
रागु नादु सब सचु है कीमति कही न जाइ ।।
रागै नादै बाहरा इनी हुकमु न बूझिआ जाइ ।। (पृ. १४२३)

सतगुरू जी ने **इलाही गुण गाने के लिए 'रागों' का प्रयोग किया है परन्तु आजकल इसके ठीक विपरीत राग-विद्या के 'प्रदर्शन' के लिए इलाही गुरबाणी का प्रयोग किया जाता है जिससे गुरबाणी का अनादर हो रहा है।**

कोई गावै रागी नादी बेदी बहु भाति करि
नही हरि हरि भीजै राम राजे ।।
जिना अंतरि कपटु विकारु है तिना रोइ किआ कीजै ।। (पृ. ४५०)

भगति नारदी रिदै न आई काछि कूछि तनु दीना ।।
राग रागनी डिंभ होइ बैठा उनिं हरि पहि किआ लीना ।। (पृ. ६५४)

गीत राग घन ताल सि कूरे ॥
त्रिह गुण उपजै बिनसै दूरे ॥
दूजी दूरमति दरदु न जाइ ॥
छूटै गुरमुखि दारु गुण गाइ ॥ (पृ. ८३२)

दूजै भाइ बिलावलु न होवई। मनमुखि थाइ न पाइ ॥
पाखंडि भगति न होवई पारब्रहमु न पाइआ जाइ ॥ (पृ. ८४९)

रागि नादि मनु दूजै भाइ ॥
अंतरि कपटु महा दुखु पाइ ॥
सतिगुरु भेटै सोझी पाइ ॥
सचै नामि रहे लिव लाइ ॥ (पृ. १३४२)

राग नाद-अनहद धुन का **अक्स** (reflection) होने के कारण शब्द की अनंत शक्ति का प्रतीक तथा प्रक्टाव है । जैसे **राग शक्ति** के द्वारा तानसेन (Tansen) ने पत्थर को पिंघला कर उसमें भाला गाढ़ दिया था । इसी प्रकार वर्षा का होना या आग लगनी इसी **राग शक्ति की करामातें हैं ।**

राग का **स्थूल स्वरुप** साज़ों के द्वारा प्रकट होता है परन्तु साज़ों की धुन का **सूक्ष्म स्वरूप तारों की थरथराहट** है तथा यह **थरथराहट** (vibration) सुर, लय, ताल द्वारा **आंतरिक तरंग रूपी भावना को प्रकट करती है ।** यह थरथराहट, रूनझुन या भावनाएं **'आंतरिक भाषा' का स्थूल रूप है तथा बाहरी भाषा का सूक्ष्म स्वरूप है ।**

ग्रामोफोन के रिकार्ड पर खुदी हुई भाषा को **'थरथराहट'** या कंपन कहते हैं। यह ग्रामोफोन पर खुदी भाषा उसके **अन्दर के संगीत (रुनझुन) का स्थूल स्वरूप हे ।**

गुरबाणी की पंक्ति "साचा साहिब साचु नाइ भाखिआ भाउ अपारु" के अनुसार **ईश्वर की भाषा अथाह प्रेम वाली है तथा यह मूक, अदृष्य, सूक्ष्म भाषा सारी सृष्टि में लगातार एक रस परिपूर्ण है तथा "अनहद-नाद" की भांति अनेक भावनाओं, तरंगों, थरथराहट, रूप तथा लहरों में गूंज रही है।**

जत्र तत्र दिसा विसा हुइ फैलिउ अनुराग ॥ (जाप पा. १०)

इलाही प्रेम की इस **"मूक-भाषा"** को ही गुरबाणी में **"अनहद-शब्द"** या **"अनहद-धुन"** आदि नाम से सम्बोधित किया गया है ।

अजपा जापु जपै मुखि नाम ।। (पृ. ८५०)

अचिंत हमारै अनहत वाजै ।।
अचिंत हमारै गोविंद गाजै ।। (पृ. ११५७)

अजपा जापु न वीसरै आदि जुगादि समाइ ।। (पृ. १२९१)

वाहिगुरु गुरु सबदु लै पिरम पिआला चुपि चबोला।। (वा.भा.गु. ४/१७)

इस **प्रेम की 'मूक भाषा'** का यह गुण है कि इसे **भावना पूर्ण सुरति-रुप-जिह्वा के द्वारा बोलते हुए कोई भी जिज्ञासु न तो कभी थकता है न कभी तृप्त होता है ।** ज्यों-ज्यों वह इस **भाषा को बोलता जाता है त्यों-त्यों वह और मस्त होता हुआ 'धुन-रुप'** या **'प्रेम-रुप' हो जाता है ।** उसे आस – पास की **भी सुध-बुध नहीं रहती ।**

सूर्य की '**भाषा'** सूर्य की **किरण** है, इन किरणों के द्वारा हमें **धूप मिलती** है, इस 'धूप' में अपने मूल स्रोत 'सूर्य' **के सभी गुण होते हैं** जैसे इसमें--

उषमा (गर्मी)
प्रकाश
निर्मलता
जीवन रौं
शक्ति

आदि सभी **गुण परिपूर्ण होते हैं ।**

ठीक इसी प्रकार **ईश्वर के 'कवाउ'(हुक्म) की भाषा 'अनहद-धुन' में इलाही गुण जैसे** —

प्रेम
माधुर्य
रस
मस्ती
खुमारी
खिड़ाव

आनन्द

सहज

ज्ञान

लिव

ताज़गी

ओत प्रोत परिपूर्ण है ।

यहां यह बात स्पष्ट करनी आवश्यक है कि **"अनहद-धुन"** अथवा इलाही **'मूक भाषा' अपने मूल निरंकार की भांति—**

अदृश्य

सूक्ष्म

लगातार

एक रस

शब्दों से दूर

मन बुद्धि से दूर

त्रिगुणों से दूर

अपने आप

आवाज रहित

है, तथा यह—

थरथराहट के रूप में

भावना के रूप में

प्रेम स्वैपना के रूप में

तरंगों के रूप में

कंपन के रूप में

लहरों के रूप में

रूण झुन के रूप में

सारी सृष्टि में निरंतर प्रवृत्त है ।

हमारी मानसिक तथा आत्मिक सूक्ष्म **'ग्रहण शक्ति' के अनुसार ही हम इलाही 'अनहद-धुन' को ग्रहण करके उसका आन्नद उठा सकते हैं ।**

जिस प्रकार प्रकाश (light) तथा ध्वनि (sound) की 'तरंगें' दूर-दूर तक बहुत तीव्र गति से पहुंच जाती हैं उसी प्रकार **इलाही नाद की तरंगों का प्रवाह भी तीव्र गति से सृष्टि में प्रवृत है ।**

इस अनहद धुन को **सुनने** तथा **अनुभव** करने के लिए जिज्ञासु को त्रिगुणी मायिकी मंडल से **उठ कर** अपनी **भावनाओं की तरंगों को 'इलाही नाद' की तरंगों (vibratioins) के साथ एक सुर (in-tune) करना पड़ेगा ।**

'इलाही नाद' में मन की **लीनता** तब ही प्राप्त हो सकती है जब सुरति **'नौं गोलकों'** अर्थात इन्द्रियों से **उठ कर दसवें-द्वार में प्रवेश करे ।**

नउ दरवाजे दसवै मुकता अनहद सबदु वजावणिआ ।। (पृ. ११०)

नउ दर ठाके धावतु रहाए ।।
दसवै निजघरि वासा पाए (पृ. १२४)

नउ घर देखि जु कामनि भूली बसतु अनूप न पाई ।।
कहतु कबीर नवै घर मूसे दसवै ततु समाई ।। (पृ. ३३९)

मूंदि लीए दरवाजे ।।
बाजीअले अनहद बाजे ।। (पृ. ६५६)

नउ सर सुभर दसवै पूरे ।
तह अनहत सूंन वजावहि तूरे ।। (पृ. ९४३)

इसलिए अन्तर-आत्मा में तथा सारी सृष्टि में बस रहे **'इलाही नाद'** के साथ **एक सुर** (in tune) **होने के लिए—**

जाप
सिम्रन
कीरतन
शब्द-विचार
साध-संगत
प्रेमा-भक्ति
सेवा

करना अति आवश्यक है ।

अंम्रित बाणी सिउ चितु लाएं अम्रित सबदि वजावणिआ ।। (पृ. ११८)

ओथै अनहद सबद वजहि दिनु राती
गुरमती सबदु सुणावणिआ ।। (पृ. १२४)

अनहद धुनि वाजहि नित वाजे गाई सतिगुर बाणी ।।
नानक दाति करी प्रभि दातै जोती जोति समाणी ।। (पृ. ४४२)

अनहत बाणी गुर सबदि जाणी हरि नामु हरि रसु भोगो ।। (पृ. ९२१)

अनहद वाजे धुनि वजदे गुर सबदि सुणीजै ।। (पृ. ९५४)

साध-संगत तथा गुरबाणी से नाम सिमरन की प्रेरणा मिलती है तथा—

प्रभ कै सिमरनि अनहद झुनकार ।। (पृ. २६३)

की अवस्था प्राप्त होती है फिर तो अन्दर क्या और बाहर क्या—

अनहद धुनी सद वजदे उनमनि हरि लिव लाइ ।। (पृ. ९१)

अणमड़िआ मंदलु बाजै ।।
बिनु सावण घनहरु गाजै ।। (पृ. ६५७)

घरि घरि निरति होवै दिनु राती घटि घटि वाजै तूरा ।। (पृ. ८८४)

विणु वजाई किंगुरी वाजै जोगी सा किंगरी वाजाइ ।। (पृ. ९०९)

'रस रूप' अकाल पुरुष के दर्शन तब ही हो सकते हैं यदि जिज्ञासु **प्रेम की 'मूक-भाषा' रूपी 'अनहद-शब्द' को अन्तर आत्मा में 'सुने'।**

पिरु रीसालू ता मिलै जा गुर का सबदु सुणी ।। (पृ. १८)

अनहद धुनि दरि वजदे दरि सचै सोभा पाइ ।। (पृ. ४२)

सोभा सुरति सुहावणी साचै प्रेमि अपार ।। (पृ. ५४)

अनहदो अनहदु वाजै रुणझुणकारे राम ।।
मेरा मनो मेरा मनु राता लाल पिआरे राम ।। (पृ. ४३६)

वाहु-वाहु किआ खूबु गावता है ।।
हरि का नामु मेरै मनि भावता है ।। (पृ. ४७८)

अनहद रुणझुणकारु सदा धुनि निरभउ कै घरि वाइदा ।। (पृ. १०३३)

माई री पेखि रही बिसमाद ।।
अनहद धुनी मेरा मनु मोहिओ अचरज ता के सवाद ।। (पृ. १२२६)

यह—

अनूप किंगरी
अनहद झंकार
सदीवी रुनझुन
अनहद शब्द
प्रेम स्वैपना
प्रेम संदेसड़े (संदेष)
"हरि नावै नाल गला"
"हरि नावे नाल मसलति"
चुप-प्रीत

अनुभव द्वारा सूक्ष्म सुरति से ही सुनी जा सकती है न कि इन स्थूल कानों द्वारा ।

अनहद झुनकोर ततु बिचारे संत गोष्ट नितु होवै।। (पृ. ७८३)

परन्तु कई जिज्ञासु अपने कानों को उंगलियों से बंद कर **सां-सां की ध्वनि को सुनने को ही 'अनहद धुन' समझते हैं** तथा वह इसी में मस्त रहते हैं । वास्तव में यह **दीर्घ भ्रम या भ्रांति है ।**

यहां वर्णन करना आवश्यक है कि गुरबाणी में **'पंच-शब्द'** बहुत बार प्रयोग किया गया है । वास्तव में यह शब्द आलंकारिक रूप में **आत्मिक आनंद की संगीतक धुन या तरंगों को दर्शाने के लिए प्रयोग किया गया है ।** कई जिज्ञासु **'पंच-शब्द'** का अभिप्राय पाँच प्रकार के **साज़ों की आवाज़** को अन्तःकरण में सुनने को ही अनहद नाद मानते हैं । कई मत **पाँच अक्षरों वाले 'मंत्र' को 'पंच-शब्द' मानते हैं ।** इस प्रकार हम व्यर्थ ही वाद-विवाद में पड़ जाते हैं ।

भाई गुरदास जी का स्पष्ट निर्णय है कि नाम रसिया तो अपनी **'सुरति' को केवल शब्द में लिवलीन** करते हुए 'पंच-शब्द' या पाँच ध्वनियों के स्थान पर

केवल एक शब्द ही सुनता है । राग-नाद के झगड़े व्यर्थ जान कर केवल **'दैवीय-प्रेम' की 'मूक-भाषा' अथवा 'अनहद-शब्द' में लिवलीन होकर मस्त रहता है ।**

वाहिगुरू गुरु सबदु लै पिरम पिआला चुपि चबोला ।। (वा.भा.गु. ४/१७)

सबद सुरति लिव साध संग पंच शब्द इक सबद मिलाए ।
राग नाद संबाद लखि भाखिआ भाउ सुभाउ अलाऐ ।
(वा.भा.गु. ६/१०)

अकाल पुरुष के अनेक गुणों में से—

हुक्म
अनहद शब्द
अनहद नाद
चुप-प्रीत
अमृत
आत्म रस
आत्म रंग

आदि, मुख्य गुण हैं ।

इन गुणों में से **'चुप-प्रीत'**, **'प्रेम स्वैपना'** या **प्रेम-पदार्थ श्रेष्ठ गुण हैं** — जो अन्य सभी **दैवीय गुणों में प्रविष्ठ तथा प्रवृत्त है ।** तभी गुरबाणी में ईश्वर को **'प्रेम पुरुष'**, **'अति प्रीतम'** कहा गया है । इससे स्पष्ट होता है कि अन्य सभी **दैवीय गुण** अथवा —

अनहद नाद
अनहद-शब्द
अनहद-धुन
अनहद झंकार
धुनकार धुन
शब्द धुन
पंच-शब्द
निर्मल नाद

रुन्झुनकार

सहज धुन

आदि में भी **इलाही 'चुप-प्रीत' अथवा प्रेम स्वैपना** की **झलक दिखाई देती है।**

दूसरे शब्दों में 'राग'-'नाद'-'धुन' की हर तरंग, हर सुर, हर लय, हर ताल में इलाही **प्रेम रंग का 'भाव' या 'अक्स' प्रविष्ठ है ।**

इस लेख का सारांश इस प्रकार दर्शाया जा सकता है—

— अकाल पुरुष **'प्रेम स्वरूप'** है ।

— संसार इलाही '**कवाउ (हुक्म) के द्वारा उत्पन्न हुआ है ।**

— यह कवाउ या 'हुक्म' **अनेक स्वरूप, रंग, तरंग, शक्तियों में प्रवृत्त हो रहा है ।**

— इसी हुक्म का प्रकाश **'अबोल बोली' (मूक भाषा) में—**

अनहद-राग

अनहद-शब्द

अनहद-धुन

अनहद-नाद

अनहद-झंकार

की तरंगों, लहरों, थरथराहट, रुन झुन के द्वारा प्रकट तथा प्रवृत हो रहा है । तथा इनके अन्दर **'चुप-प्रीत' की तार** निरंतर अपना **माधुर्य रस तथा इलाही भावनाएं बिखेर रही है ।**

— यह सारा **'प्रिम-खेल' अदृश्य आत्मिक मंडल में से उत्पन्न होता है।**

— इस 'प्रिम-खेल' का **गुप्त 'नाद' सदैव 'अनहद-धुन' में एक रस समाया है ।**

— इस इलाही मंडल की **'मूक भाषा'** को ही **'अनहद-धुन'** कहा जाता है ।

— यह **'चुप-प्रीत' का नाद** हमारे मन को इलाही भावनाओं से परिपूर्ण करके **विस्मादित करता है ।**

— यह 'इलाही भावना' गुरबाणी में भी परिपूर्ण है तथा 'राग' में भी इन भावनाओं को प्रकटाने की सर्मथा हैं।

— इसीलिए गुरबाणी रागों में उच्चारित की गई है ।

— जब इलाही भावना से परिपूर्ण किसी शब्द को उसकी तासीर से मिलते जुलते राग में गाया जाए तो वह भावना और भी तीव्र हो जाती है तथा हमारा कठोर **मन द्रवित** हो कर इलाही प्रेम स्वैपना के मंडल में तैरते हुए **'अनहद-धुन' की झलकियों का पात्र बनता है ।**

— जब इस 'अनहद-धुन' की **तरंगें या लहरें** बाहर की ओर प्रकट होती है तो यह **'ध्वनि', 'भाषा', तथा 'शब्दों'** का रूप धारण कर लेती है।

— इन बाहरमुखी तरंगों तथा लहरों को राग-नाद के पृथक – पृथक नाम दे दिये जाते हैं जैसे 'सिरीराग' 'माझ राग' 'गउड़ी राग' आदि ।

— साधारण लोग बाहरी टूँ-टूँ तथा ढम-ढम से ही सन्तुष्ट हो जाते हैं ।

— यह बाहरी नाद वास्तव में अन्दर बज रही 'अनहद-धुन' का **अक्स** (reflection) **प्रतीक तथा प्रकट रूप है ।**

— शब्द तथा राग-नाद का **वास्तविक रस तो 'अनुभव' का खेल है ।**

— **अनुभव द्वारा** 'अनहद-धुन' को सुन कर तथा आनंद ले कर हमारा मन द्रवित हो कर **विस्माद अवस्था में चला जाता है ।**

सुंन समाधि अनहत तह नाद ॥
कहनु न जाई अचरज बिसमाद ॥ (पृ. २९३)

हिरदै सुणि सुणि मनि अंम्रित भाइआ ॥ (पृ. ३६६)

अनहद बाजे अचरज बिसमाद ॥ (पृ. ८८८)

अनहद सबद अचरज बिसमाद ॥ (पृ. ११४३)

तपति बुझी सीतल आघाने सुनि अनहद
बिसम भए बिसमाद ॥ (पृ. १२१८)

माई री पेखि रही बिसमाद ॥
अनहद धुनी मेरा मनु मोहिओ अचरज ता के सवाद ॥ (पृ. १२२६)

फिर तो हमें —

चिड़ियों की चूँ-चूँ
जूतों की चीं-चीं
नदी नालों के बहने की ध्वनि
झरने की झरन-झरन
पवन की साँ-साँ
रात्रि की सुंन-समाधी आदि

सभी ध्वनियों में से हर समय 'दैवीय-राग' 'दैवीय-धुन' ही सुनाई देगी ।

जेता सुनना तेता नामु ॥
जेता पेखनु तेता धिआनु ॥ (पृ. २३६)

जो बोलत है म्रिग मीन पंखेरू
सु बिनु हरि जापत है नही होर ॥ (पृ. १२६५)

V V V